धर्मरक्षा से ही आत्मरक्षा होगी

श्रीराम शर्मा आचार्य

धर्मरक्षा से ही आत्मरक्षा होगी

लेखक :

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०११ मूल्य : ७.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि
मथुरा (उ. प्र.)

लेखक :
श्रीराम शर्मा आचार्य

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म का पालन करने में ही कल्याण है

यतोऽभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।

अर्थात "धर्म वह है, जिसमें इस लोक में अभ्युदय हो और अंत में मोक्ष की प्राप्ति हो।"

इस न्याय के अनुसार जिसने धर्म का पालन किया, वही अपने जीवन को सार्थक बना सका। मनुष्य, पशु, पक्षी आदि सभी अपने-अपने स्वाभाविक धर्म का निर्वाह करते हैं। धर्म ही इस लोक और परलोक का निर्माता है। यही एक ऐसा सुगम मार्ग है, जो जीवननैया को पार लगाने में सहायक होता है।

धर्म उस सर्वव्यापक परमात्मा का श्रेष्ठ विधान है। वही संपूर्ण जगत को धारण करने वाला है। उसी के सहारे पृथ्वी और आकाश टिके हुए हैं। समुद्र अपनी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता, यह उसका धर्म है। जलवृष्टि करना मेघ का धर्म है। दग्ध करना अग्नि का धर्म है। इस प्रकार सब अपने-अपने धर्म पर अटल हैं।

एक बार एक राजा ने अपराधी के तर्क का उत्तर देते हुए कहा—"सर्प का धर्म काटना है, वह मनुष्य को काट खाए तो उसका कुछ अपराध नहीं है। अपराध उस मनुष्य का है, जिसने सर्प के बिल में हाथ डालकर अपने स्वभाव के विरुद्ध कार्य किया।"

ईश्वर जैसे अनादि और सनातन है, वैसे ही धर्म भी सनातन है। जिसने धर्म के विरुद्ध कार्य किया, वही नष्ट हो गया। रावण, कंस, दुर्योधन आदि अनेक महाबलवानों का उदाहरण दिया जा सकता है, जो धर्म के विपरीत चलकर नष्ट हो गए। उनके कुलों में कोई रोने वाला भी उस समय शेष नहीं बचा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विभिन्न मत-मतांतरों को धर्म कह दिया गया है। विभिन्न संप्रदायों को धर्म कहा गया है। परंतु न तो मत-मतांतर धर्म हैं और न संप्रदाय ही। वे तो धर्म की ओर ले जाने वाले मार्ग हैं। उनमें से किसी मार्ग को अपना लीजिए, वह आपको एक लक्ष्य की ओर ले जाएगा। उन मार्गों में जो शुभ कर्म हैं, उन्हीं का समूह धर्म है। उसमें जो विभिन्न आडंबर आदि हैं, वे यथार्थ न होने से त्याज्य हैं। अत: धर्म श्रेष्ठ कर्मों का ही रूपांतर है।

मनुष्य यह मान ले कि आत्मा सबकी एक ही है, तो उसकी समझ में यह बात आ जाएगी कि दूसरे को दु:ख हुआ तो अपने को ही हुआ। यदि आपने किसी को सुख पहुँचाया तो प्रकारांतर से अपने को ही पहुँचाया। अर्थात दूसरे का दु:ख-क्लेश अपना ही मानना चाहिए।

सभी प्राणी अपने-अपने कर्म का फल भोगते हैं। यदि कोई समझे कि आज ही किसी का हाथ काटकर उसका परिणाम देखे कि आज ही मेरा भी हाथ कटता है या नहीं तो तुरंत वैसी कोई बात नहीं होगी, पर्ंतु उसके दुष्कर्म का फल कालांतर में मिलता अवश्य है। बहुतों को तो तत्काल भी मिल जाता है। यह आवश्यक नहीं कि फल उसी प्रकार हाथ कटने से मिले, बल्कि वह किसी भी प्रकार से सही, भुगतना अवश्य पड़ता है।

एक बार की बात है—एक बच्चे को किसी कुत्ते ने काट खाया, लोगों की समझ में कुत्ता पागल नहीं था। अत: बच्चे का साधारण उपचार हुआ और वह ठीक हो गया। परंतु पाँच-सात वर्ष बाद अकस्मात उसके शरीर में भीषण दरद हुआ। डॉक्टरों ने बहुत सोच-विचार के पश्चात निर्णय किया कि इसे कभी पागल कुत्ते ने काटा है, उसी का विष इस समय उभर आया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अब सोचिए कि कब का विष कब उभरा ? इसी प्रकार हमारा कब का बुरा कर्म न जाने कब उभर आवे ? इसलिए दूसरों के अनिष्ट-चिंतन से बचना चाहिए। उसका परिणाम अपने लिए ही अहितकर होता है।

हम सब एक परमात्मा द्वारा उत्पन्न पुत्र हैं, इसलिए परस्पर भाई-भाई हैं तो एक भाई अपने दूसरे भाई को दु:ख क्यों देना चाहेगा ?

ईश्वर सबका रक्षक है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को दु:ख देना चाहे तो वह दुखी और निर्बल की सहायता करेगा। भगवान अत्याचारी का साथ कभी नहीं देते। वे उसी पलड़े पर बैठते हैं जो हलका हो, परंतु धर्म उसके साथ होना चाहिए। अधर्मी मनुष्य के वे साथी नहीं हैं। जिसे उसकी आवश्यकता नहीं, उसके पास वे कभी नहीं जाते। संतों ने 'निर्बल के बलराम' कहकर इस बात की पुष्टि की है।

सभी तत्त्वज्ञानी जानते हैं कि परमात्मा सबकी उत्पत्ति, पालन और विनाश भी करते हैं। वही इस जीव को अपनी माया में भ्रमाते और वही उससे निकाल लेते हैं। आप कहेंगे कि जब परमात्मा को ही हमारी चिंता है तो हम क्यों अपनी चिंता करें ? आपका यह तर्क ठीक तो है परंतु आपने कभी यह सोचा है कि आपके गमनागमन के लिए सुंदर मार्ग तो बना है, परंतु उस पर चलना आपको ही पड़ेगा। अपने पाँवों को कष्ट दिए बिना आपका कहीं भी आना-जाना संभव नहीं है।

इससे यह सिद्ध हुआ कि कर्म किए बिना सब निरर्थक है। कर्म ही धर्म है। उसी का पालन करने से सुख-शांति मिलेगी। हम जो कुछ करें उसमें अपना ही लाभ न देखें। आपके कर्म से दूसरों की हानि न हो। लाभ हो तो बहुत ही अच्छा है। लाभ न हो तो हानि भी तो नहीं होनी चाहिए।

इसे दूसरे प्रकार से भी समझिए—आपसे किसी की हानि हुई है, उसके मन में द्वेषाग्नि उत्पन्न हो जाएगी और जब कभी अवसर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मिलेगा, वह आपको भी हानि पहुँचाने का यत्न करेगा। आप चाहें कि आप जिससे द्वेष करते हैं, वह आपसे प्रेम करे तो यह कभी संभव नहीं है। प्रेम के बदले में प्रेम पाया जा सकता है, द्वेष के बदले प्रेम कैसे मिलेगा?

ऐसे महापुरुष भी हैं जो द्वेष के बदले में प्रेम प्रदान करते हैं परंतु उनकी गणना साधारण मनुष्यों में नहीं की जा सकती। वे तो पहुँचे हुए पुरुष होंगे जिन्होंने राग-द्वेष को त्याग दिया है। वे प्राणिमात्र के प्रति प्रेम और दया का भाव रखते हैं। उन्हें अपने से द्वेष रखने वाले के प्रति शत्रुता नहीं होती और स्नेह करने वाले से प्रेम नहीं होता। उनका धर्म विश्व का कल्याण करने वाला है।

एक बात और है—आप किसी शत्रु से प्रेम करते हैं तो शत्रु आपसे द्वेष कब तक करता रहेगा? उसे एक दिन अवश्य झुकना पड़ेगा आपके सामने। वह विवश हो जाएगा अपना शत्रुभाव त्यागने के लिए। इसमें दोनों का हित भी है, तो क्यों हम ऐसे मार्ग पर चलें जो हमारे लिए अहितकर है? हम क्यों न उसका और अपना दोनों का कल्याण सोचें? यदि हम ऐसा आचरण करने लगें तो कोई झंझट ही सामने न आवे, फिर कोई विवाद जीवन के क्षेत्र में बाधक न बने।

मनुष्य के समान ही पशु, पक्षी आदि को पीड़ित करना भी अधर्म है। जब हमें कोई शक्तिशाली व्यक्ति पीड़ित करे तो हमें स्वयं तो कष्ट होता ही है साथ ही हमारा मन उस पीड़क को कोसता भी है, उसी प्रकार आज जिस निर्बल को सताएँगे तो वह भी आपको शाप देगा। आपके द्वारा किए गए अन्याय की प्रतिक्रियास्वरूप उसका प्रतिफल भी आपको ही भोगना पड़ेगा।

आज अत्याचारी अपने अन्याय पर भले ही मुस्करा ले, परंतु जब अंत समय आएगा और अट्टहास करती हुई मृत्यु अपना भयंकर पंजा तेजी से जकड़ने का यत्न करेगी, उस समय अपने कुकृत्यों पर पश्चात्ताप करने के सिवाय और कुछ भी न बन पड़ेगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमात्मा द्वारा रची गई सृष्टि में सभी जड़-चेतन प्राणी अपनी-अपनी सामर्थ्यानुसार एक-दूसरे का उपकार करते हैं। वे एक-दूसरे का विनाश नहीं, उत्कर्ष चाहते हैं। जब पशु-पक्षियों तक में उपकार की भावना भरी है तो हम मनुष्य होकर भी दूसरों का उपकार क्यों न करें?

हमें परोपकारी बनना चाहिए। दूसरों को कष्ट में पड़ा देखकर उनके साथ सहानुभूति का व्यवहार करें तो इसमें परमात्मा भी प्रसन्न होते हैं। पड़ोसियों से सद्व्यवहार करना भी हमारे धर्म में सम्मिलित है। इसलिए हमें ऐसी चेष्टा करनी चाहिए जिससे हमारे द्वारा किसी को कोई कष्ट न होने पावे।

हमारे ऋषियों ने मानव धर्म की जो व्याख्या की है, उसका सार यही है कि मनुष्य यदि ईश्वर को मानता है और उसका धर्म में विश्वास है तो उसे सदाचारी, सत्यनिष्ठ एवं सत्यवक्ता होना चाहिए। दया, प्रेम, क्षमा आदि गुण जिस मनुष्य में हैं, वह सभी का प्रीति-भाजन बन सकता है। अत: अपना कल्याण चाहते हो तो धर्ममार्ग का अवलंबन करो। इसी में सब प्राणियों का परम हित है।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म ही रक्षा करेगा, और कोई नहीं !

यह जीवन इस तरह विनिर्मित हुआ है कि इसमें संघर्ष, परिस्थितियों के उतार-चढ़ाव, दीनता, कुटिलता आदि के अप्रत्याशित आक्रमण सभी को सहन करने पड़ते हैं। परेशानियों, कष्ट और मुसीबतों की आँधी आती है तो मनुष्य को झकझोरकर रख देती है, उसकी शक्तियाँ कुंठित हो जाती हैं। बुद्धि ठीक तरह काम नहीं करती, निराशा आ घेरती है। ऐसे समय एक चाह उत्पन्न होती है—कौन हमारी रक्षा करे, कौन हमारा उद्धार करे, सही पथ का ज्ञान कौन करावे ?

शास्त्रकार समुद्यत हुआ, उसने बताया—

यो धर्मो जगदाधारः स्वाचरणे तमानय।
मा विडम्बय तं स ते ह्येको मार्गे सहायकः।।

अर्थात "हे मनुष्यों ! जो धर्म सारे संसार का आधार है, तुम उसी का आचरण करो। धर्म से विमुख मत बनो। तुम्हारा एकमात्र सहायक धर्म ही है।"

यह सच है कि संसार के संपूर्ण क्रिया-कलाप और व्यवसाय, धर्म के कारण ही टिके हैं। धर्म, सुख-शांति की परिस्थितियों का जन्मदाता है। लोकजीवन में वह आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान है। जिस दिन धर्म का पूर्णतया लोप हो जाएगा, उस दिन संसार को सर्वनाश से कोई बचा न सकेगा।

इस युग में जो अधर्माचरण बढ़ रहा है, उससे मनुष्य की नैतिक अवस्था, सुख और शांति में बड़ा व्याघात उत्पन्न हो रहा है। किसी के भी मन में संतोष नहीं है। सर्वत्र स्वार्थ, भोग और शोषण का जाल फैला है। इस जंजाल में ग्रसित मनुष्य बुरी तरह छटपटा रहा है, पर त्राण का कोई रास्ता उसे सूझ नहीं रहा है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राह एक ही है—धर्म ! वेद, उपनिषद्, स्मृति, पुराण आदि धर्मशास्त्रों में इसी तत्त्व का निरूपण हुआ है। जिस युग में धर्म की प्रधानता रही, वह युग 'सतयुग' कहलाया। सतयुग में सुख और संपन्नता का आधार धर्म होता है। इसकी विकृति और विडंबना ही कलियुग में दु:ख, क्षोभ और अशांति का कारण बनती है।

किसी भी अवस्था में मनुष्य की रक्षा धर्म ही करता है। भगवान राम वन जाने के लिए तैयार हुए तो जीवन-रक्षा की कामना से उन्होंने माता से आशीर्वाद माँगा। विदुषी कौशल्या ने कहा—

यं पालयसि धर्मं त्व प्रीत्या च नियमेन च।
स वै राघवशार्दूल धर्मस्त्वामभिरक्षतु॥

—(वा. रामायण २.२५.३)

अर्थात "हे राम ! तुमने जिस धर्म की प्रीति और नियम का पालन किया है, जिसके अनुसरण से तुम वन जाने को तत्पर हुए हो, वही धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा।"

धर्म शब्द 'धृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ है—धारण करना। अर्थात जो मनुष्य को धारण करे, शुद्ध और पवित्र बनाकर उसकी रक्षा करे, वही धर्म है। धार्मिक कर्मकांड, दान-पुण्य, पूजा-पाठ, अर्घ्य—अंजलि आदि धर्म के साधन और बाह्य प्रतीक मात्र हैं, यथार्थ धर्म तो—परोपकार, दूसरों की सेवा, सचाई, संयम और कर्त्तव्य पालन को कहते हैं। धर्म पर चलने का अर्थ है—इन बातों का पालन करना, इन्हें अपने व्यवहार और आचरण में आश्रय देना।

यह नियम ही सर्वश्रेष्ठ है, इससे मनुष्य जीवन में एक प्रकार का विलक्षण आह्लाद भरा रहता है। धर्म मनुष्य जीवन की अग्निशिखा है, जो प्रकाश भी उत्पन्न करती है और उसकी क्रियाशीलता भी जाग्रत रखती है। धर्मशील पुरुष के अंत:करण में वह बल होता है, जो हजारों विघ्नों, कोटि, प्रतिद्वंद्वियों को परास्त कर देता है। भगवान राम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वन में अकेले थे, विपदाएँ आईं, विरोध उत्पन्न हुआ, किंतु उनकी मर्यादा पर कोई आँच नहीं आई। सत्यनिष्ठ हरिश्चंद्र ने धर्म की रक्षा के लिए स्त्री, पुत्र, राज्य आदि सर्वस्व परित्याग कर दिया, पर अंत में महर्षि विश्वामित्र को उनके समक्ष घुटने टेकने ही पड़े। **'यतोधर्मस्ततो कृष्णः'** इस वचन का समर्थन स्वयं भगवान कृष्ण ने किया है—

मम प्रतिज्ञां च निबोध सत्यां,
वृणे धर्ममृताज्जीविताच्च।
राज्यं च पुत्रांश्च यशो धनं च,
सर्वं न सत्यस्य कलामुपैति॥

अर्थात मेरी प्रतिज्ञा अटल है। मैं जीवन और मोक्ष से धर्म को श्रेष्ठ मानता हूँ। राज्य, पुत्र, यश और धन ये सब सत्य अर्थात धर्म का एक अंश-कला के भी बराबर नहीं हैं।

किंतु देखते हैं कि इस युग में पाप और अधर्म ही अधिक बढ़ रहा है। धर्म के नाम पर जो अधर्माचरण का इंद्रजाल फैला हुआ है, उससे धर्म का सही रूप ही विलुप्त हो चला है। इसे लोगों ने ठगी का मार्ग बना लिया है, पर इससे कुछ लाभ नहीं होता। धर्म का फल पाना है तो इसे अपने जीवन में घुला डालो। आपके प्रत्येक रोम-रोम में, विचार और कर्म में सर्वत्र ही धर्म समाविष्ट हो तो आप एक अलौकिक आनंद से प्रत्येक क्षण भरे-पूरे रहेंगे।

धर्म अनादि तत्त्व है। यह एक प्रकार का दैवी संदेश है। जिस समय लोगों में भाषा, साहित्य और विचार प्रदर्शन की क्षमता नहीं थी, उस समय मनुष्य के समक्ष धर्म-अधर्म का प्रश्न उपस्थित हुआ। तब लोग अपने अंतःकरण की आध्यात्मिक प्रेरणा को प्रमाण मानते थे और उसी के अनुसार आचरण करते थे। इससे यह प्रकट होता है कि धर्म

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानव समाज का नियम या प्रतिबंध नहीं है, वरन यह वह दृढ़ विचार है, जो संपूर्ण संसार की भलाई को ध्यान में रखकर परमात्मा द्वारा प्रस्फुटित किया गया है।

इसलिए उन नियमों को जिनमें सार्वभौमिकता की उदार-भावना सन्निहित हो, पालन करना ही धर्म कहा जाता है। स्वार्थ और भय के कारण इन नियमों का यहाँ उल्लंघन करना ही अधर्म है। परपीड़न, द्वेष, ग्लानि, छल-कपट, झूठ, बेईमानी आदि बुराइयाँ मनुष्य की स्वार्थपूर्ण संकीर्णताओं के कारण होती हैं। इनसे 'सर्वहिताय' की सामूहिक भावना का अतिक्रमण होता है, जिससे दूसरों को दुःख मिले या औरों के हितों पर आघात पहुँचे, वह धर्म नहीं कहा जा सकता। धर्म का श्रेष्ठ स्वरूप वह है, जिसमें मनुष्य सबके कल्याण के लिए अपने को घुलाता है। दूसरों को सुखी देखने के लिए जो अपने थोड़े से सुखों का भी परित्याग कर देता है, सबकी रक्षा के लिए जो अपने प्राण हवन कर देता है, वह सच्चा धर्मनिष्ठ कहलाने का अधिकारी है।

धर्म परस्पर भेदभाव करना नहीं सिखाता। वह तो मनुष्य में प्रेम और प्रीति उत्पन्न करता है। सबको भाई मानना और सबके साथ समानता का व्यवहार करना ही उसे प्रिय है। वह जाति-पाँति के, जीव-जीव के शारीरिक भेद को नहीं मानता। आत्मा सर्वत्र प्रकाशमय है, वही संपूर्ण प्राणियों में समाया है, फिर एक प्राणी की दूसरे प्राणी के साथ विलगता कैसी? यह दुराव क्यों हो, जब सात्त्विक दृष्टि से हम में कोई भेद नहीं है। धर्म एक आध्यात्मिक तत्त्व है, वह निर्मल है, पवित्र है और जिस मनुष्य के पास रहता है, उसे ही निर्मल अंतःकरण वाला बना देता है। कहते हैं कि सुहागे से सोने के रंग-रूप में निखार आता है, मनुष्य में निखार और तेजस्विता धर्म जमाता है। धर्म ही मनुष्यजीवन का प्राण है।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्मरक्षा से आत्मरक्षा

धर्म शब्द 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ है—बनाए रखना, धारण करना, पुष्ट करना। धर्म एक ऐसा मापदंड है जो किसी भी वस्तु के उक्त मूलतत्त्व का बोध करता है जिसके कारण वह वस्तु है। महर्षि कणाद ने धर्म की व्याख्या करते हुए कहा है—**'यतोऽभ्युदय-निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः।'** जिससे अभ्युदय अर्थात लौकिक जीवन की समृद्धि, विकास और आत्म-कल्याण की प्राप्ति हो वही धर्म है। छांदोग्योपनिषद् में धर्म की तीन शाखाओं का उल्लेख किया गया है। **'त्रयो धर्मस्कंधा'** जिसमें गृहस्थ, तपस्वी, ब्रह्मचारी के कर्त्तव्यों की विवेचना की गई है। भगवद्गीता तथा मनुस्मृति आदि में धर्म का अभिप्राय जीवन की विभिन्न स्थितियों में अपने-अपने कर्त्तव्य पालन से है। महाभारत में कहा है—

धारणाद्धर्ममित्याहुर्धर्मो धारयते प्रजाः।
यत्स्याद्धारणसंयुक्तं स धर्म इति निश्चयः॥

—(महा. शांति. १०९.११)

अर्थात "धारण करने वाला होने से उसे धर्म कहा गया, क्योंकि यह प्रज्ञा को धारण करता है। अर्थात उसे पुष्ट करता है, समर्थ बनाता है, जो धारण करने में समर्थ है वही धर्म है।"

संक्षेप में धर्म वह कर्त्तव्य विधान है जिसके द्वारा जीवन का आंतरिक एवं बाह्य सभी प्रकार का विश्वास सध सके। शास्त्रीय भाषा में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि प्रयोजनों की प्राप्ति जिस मार्ग पर चलने से हो सके वही धर्म है। जीवन की साधना का व्यवस्थित विधान है। सभी भाँति उन्नत, विकसित, कल्याणकारी, आनंदयुक्त जीवन जीने का अर्थशास्त्र है—धर्म। इसीलिए डॉ. राधाकृष्णन के शब्दों में, "धर्म की शक्ति ही जीवन की शक्ति है। धर्म की दृष्टि ही जीवन की दृष्टि है।" जीवन और धर्म की अनन्यता आवश्यक है, अनिवार्य है। इसीलिए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बापू ने कहा था—"धर्म जिंदगी की हर श्वास के साथ अमल में लाने की चीज है।" क्योंकि धर्म के रूप में ही उन सिद्धांतों का निर्माण हुआ है जिनका हमारे दैनिक जीवन में धर्म को मनुष्य के चरित्र में अटल बल प्रदान करने वाला बताया है।

निस्संदेह धर्म-व्यवस्था मानवजीवन की सभी भाँति समुन्नत, प्रकाशमान बनाने की पद्धति है। डॉ. राधाकृष्णन ने कहा है—"धर्म वह आध्यात्मिक अग्नि है जो प्रत्येक व्यक्ति के अंदर जलती है, ज्वाला को प्रज्वलित करने में सहायता करता है।" इसलिए धर्म ही संसार में सबसे श्रेष्ठ है।

"धर्मो हि परमो लोके धर्मे सत्यं प्रतिष्ठितम्।"

अर्थात "धर्म ही संसार में सर्वश्रेष्ठ है। धर्म में ही सत्य की प्रतिष्ठा है।"

इस तरह धर्म ही मनुष्यता प्रदान करने वाला है। शास्त्रकार ने लिखा है—

आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मोहि तेषामधिको विशेषो धर्मेणहीनाः पशुभिः समानाः॥

अर्थात "खाने, सोने, डरने, मैथुन के बारे में पशु और मनुष्य परस्पर समान हैं। केवल धर्म ही मनुष्यों में विशेष है। यदि वह भी न रहे तो फिर मनुष्य पशु के समान ही है।" धर्म ही मानवजीवन को संस्कारित कर उसे उत्कृष्ट बनाता है।

धर्म की धारणा में वे सब अनुष्ठान-गतिविधियाँ आती हैं जो मनुष्य के जीवन को गढ़ती हैं, उसे बनाती हैं। समाज में प्रत्येक व्यक्ति की इच्छाएँ, आकांक्षाएँ भिन्न-भिन्न होती हैं। परस्पर विरोधी आवश्यकताएँ भी होती हैं, लेकिन धर्म इन सबको नियंत्रित कर उन्हें जीवन की सही दिशा में प्रेरित करता है। धर्म का नियम जीवन में आध्यात्मिक सत्य की प्रतिष्ठापना करना है, लेकिन संसार से विरक्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करके नहीं, अपितु जीवन के संपूर्ण व्यवसाय, कार्यक्रम को आध्यात्मिक विश्वासों के द्वारा नियंत्रित करके, आनंद, व्यवसाय, काम आदि सभी की प्राप्ति इस विश्वास के द्वारा कराता है, इन्हें उपेक्षित नहीं बनाता। धर्म जीवन की शाश्वतता को आधार मानकर चलता है। जीवन में इहलौकिक (सांसारिक) अथवा पारलौकिक भेद कोई भेद नहीं है। धर्म, भक्ति और मुक्ति को अलग-अलग नहीं मानता, धर्म दैनिक जीवन के सामान्य व्यवसाय को भी सच्चे अर्थों में भगवान की सेवा बना देता है। वह काम, अर्थ, मोक्ष का संगम भी है। धर्म सामान्य कृत्यों को भी अपनी विशेषता से मुनियों की साधना की तरह ही प्रभावशाली बना देता है।

धर्म तपस्या को ही सर्वोपरि नहीं मानता, न शारीरिक सुखों के निष्प्रयोजन परित्याग को महत्त्व देता है। वह जीवन को आनंदमय देखना चाहता है। आनंद इंद्रिय ग्राह्य भी हो सकता है और आत्मिक भी। इस तरह का कोई भी आनंद धर्म की मर्यादा में निंदनीय नहीं है। इसी तरह धन-संपत्ति आदि भी अपने आप में कोई पाप नहीं है। धर्म इसके लिए रोक नहीं लगाता। लेकिन धन संग्रह करने के उपायों से किसी दूसरे का अहित होता हो तो वह धर्म की दृष्टि में निंदनीय है। धर्म इस तरह के प्रयत्नों को बुरा बताकर उन पर रोक लगाता है और सही मार्ग बताता है। इसी तरह उत्तम संतान लाभ के लिए विवाह करना धर्म द्वारा अच्छा माना गया है। किसी भी रूप में धर्मपरायणता, सुखभोग, संपत्ति, विवाह आदि जीवन की पूर्णता के अवरोधक नहीं हैं, जब वे आत्मकल्याण और समाज-हित के लिए किए जाते हों। लेकिन जब इनका प्रयोजन जीवन की समृद्धि, विकास से दूर हटकर अपने आप में केंद्रित हो जाता है तभी ये अच्छे नहीं माने जाते। धर्म-आचार का शास्त्र ऐसी अनुमति नहीं देता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म संपूर्ण जीवन का, हमारे समस्त क्रिया-कलापों का नियंत्रण करता है, आध्यात्मिक मान्यता और विश्वासों के द्वारा। वह आध्यात्मिक मान्यता है—मनुष्य का आत्मिक गौरव। प्रत्येक प्राणी परमात्मा का चैतन्य अंश है। इसलिए धर्म कहता है—"सब प्राणियों के हृदय में परमात्मा अंश रूप से विराजमान है।" धर्मशास्त्र के प्रणेता ऋषि ने कहा है—

एको भगवान् वासुदेवो हि सर्वभूतेष्ववस्थितः।
एतज्ज्ञानं हि सर्वस्य मूलं धर्मस्य शाश्वतम्॥

अर्थात "शाश्वत धर्म का यही मूल है कि भगवान वासुदेव ही सर्वभूतों में निवास करते हैं।"

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्त्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥

अर्थात "समझ लो धर्म का सार यही है और फिर इसी के अनुसार आचरण करो। दूसरों के प्रति वैसा व्यवहार मत करो जैसा तुम अपने लिए नहीं चाहते।"

महाभारत में कहा है—

सर्वेषां यः सुहृन्नित्यं सर्वेषां च हिते रतः।
कर्मणा मनसा वाचा स धर्म वेद जाजले॥

—(महा. शांति पर्व २६२.९)

"जो दूसरों के लिए सुहृद (आत्मीय भाव वाला) है। जो अपने मन, वचन, कर्म से निरंतर दूसरों के कल्याण में लगे रहते हैं, जो सदा दूसरों का मित्र रहता है। हे जाजलि ! वह धर्म को ठीक-ठीक समझता है।"

दूसरे शब्दों में, धर्म व्यक्तिगत जीवन के उत्कर्ष के साथ-साथ सामाजिक जीवन की भी विधि-व्यवस्था का इस प्रकार निर्णय करता है कि सभी को जीने, विकसित होने का समानाधिकार मिले। धर्म एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आचारशास्त्र और पथप्रदर्शक है जिसके द्वारा वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में सुख-शांति, आनंद, प्रगति की साधना निर्बाध रूप से की जा सके, बिना किसी को हानि पहुँचाए।

धर्म और मानवजीवन का अनन्य संबंध है, क्योंकि धर्म ही उस क्रिया, अनुष्ठान, आचार-पद्धति का भंडार है जिसके द्वारा मनुष्य को मनुष्य बनाया जा सकता है। इसलिए किसी भी कारण धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए। धर्म के लिए मर जाना अच्छा है। गीता कहती है— '**स्वधर्मे निधनं श्रेयः।**' महर्षि व्यास कहते हैं—

धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः।
तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोवधीत्॥

— (महा. वन. ३१३.१२८)

अर्थात "मारा हुआ धर्म ही हमेशा मारता है, हम से रक्षा किया हुआ धर्म ही हमारी रक्षा करता है, इसलिए धर्म का हनन नहीं करना चाहिए, जिससे तिरस्कृत धर्म हमारा विनाश न करे।"

सचमुच अपने धर्म की उपेक्षा करने पर मनुष्य नष्ट हो जाता है। महात्मा गांधी ने कहा है—"जहाँ धर्म नहीं, वहाँ विद्या, लक्ष्मी, स्वास्थ्य आदि का अभाव होता है। धर्म रहित स्थिति में बिल्कुल शून्यता होती है।"

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म आवश्यक है और उपयोगी भी

मानवजीवन में धर्म एवं सदाचार ही वह तथ्य है, जिस पर चलते हुए सुख-शांति के साथ स्वयं जीने और दूसरों को जीने देने की प्रक्रिया संपन्न हो सकती है। धर्म का अर्थ विशेषता या स्वभाव भी है। जिस मार्ग पर चलते हुए लक्ष्य को प्राप्त कर सकना संभव होता है उसे धर्म कहते हैं। धर्म को जीवन का प्राण भी कहना चाहिए। इसका परित्याग करके मनुष्य पशु ही नहीं, पिशाच भी बन जाता है। इसलिए आदमी को, धर्म-कर्त्तव्यों का परित्याग करने वालों को इस देश में सदैव घृणा की दृष्टि से देखा गया है। शास्त्र का वचन है कि जो धर्म का पालन करता है उसकी धर्म ही रक्षा करता है, पर जो उसे नष्ट कर देता है उसे नष्ट किया हुआ धर्म ही नाश कर देता है। यह सिद्धांत सर्वथा सत्य है। जिसने धर्म त्यागा उसे सभी विभूतियाँ त्याग कर चली जाती हैं। उसे दु:ख-दुर्भाग्य ही सदा घेरे रहते हैं। ऐसे लोग आग में जलते रहने जैसी बेचैनी और नरक जैसी यंत्रणाग्रस्त मनोभूमि लेकर जिंदगी के दिन ज्यों-त्यों पूरे करते हैं।

धर्म का प्रधान चिह्न है—सदाचार एवं कर्त्तव्य-पालन। मनुष्य अपने इस आदर्श एवं उत्तरदायित्व को ठीक तरह अपनाए रहे, इसी उद्देश्य के लिए समस्त धर्मतंत्र की विशालकाय रचना हुई। आस्तिकता, उपासना, शास्त्र-श्रवण, पाठ, पूजा-कथा, कीर्तन, सत्संग, प्रवचन, व्रत, उपवास, तीर्थयात्रा, व्रत, नियम, संयम, त्योहार, संस्कार आदि समस्त प्रक्रियाएँ इसी उद्देश्य को लेकर विनिर्मित हुई हैं कि मनुष्य वासना और तृष्णा के आकर्षणों एवं प्रलोभनों का मुकाबला करता हुआ अपने कर्त्तव्यों पर अडिग बना रहे। यदि यह उद्देश्य पूरा न होता तो सारा धार्मिक कर्मकांड एक प्रकार से निष्प्राण एवं निरुद्देश्य ही सिद्ध होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वरीय सत्ता के प्रति आस्था रखने, उसका चिंतन-मनन, ध्यान और भजन करने का उद्देश्य यही है कि मनुष्य अपने चारों ओर, अंदर और बाहर उस निष्पक्ष न्यायकारी और सुनिश्चित कर्मफल देने वाली शक्ति को उपस्थित समझे। पाप कर्मों के दंड से डरे और मर्यादाओं का उल्लंघन करने पर उसके कठोर प्रतिफल का ध्यान रखते हुए अनीति न करे। यदि उपासक में ईश्वरीय न्याय और कर्मफल की सुनिश्चितता पर आस्था न हो तो वह भक्तिभावना निरर्थक ही सिद्ध होगी। उस निरर्थक उपासना से ईश्वर की प्रसन्नता एवं कृपा किसी को भी ज्ञात न हो सकेगी। धर्म-कर्मों से जिस स्वर्ग, मुक्ति, सिद्धि, वरदान, देव-कृपा, सुख-शांति, समृद्धि, साक्षात्कार आदि लाभों की प्रगति होती है, वह केवल उन्हीं के लिए संभव है जिन्होंने धर्म के मूल स्वरूप को समझा है, उसे अपने जीवन में धारण किया है और चरित्र को उज्ज्वल बनाया है। लौकिक और पारलौकिक जीवन की समस्त विभूतियाँ सदाचार के ही फलस्वरूप प्राप्त होती हैं और धर्म को सदाचार का प्रेरक एवं उत्पादक माना गया है। इसलिए यह निष्कर्ष निकाला गया है कि धर्म से विभूति एवं सुख-शांति प्राप्त होती है। कोई व्यक्ति धर्म की बाह्य प्रक्रियाओं को तो पूरा करे, पर सदाचार के प्रति आस्था न रखे—कर्त्तव्यों, उत्तरदायित्व और मर्यादाओं का उल्लंघन करे तो यही कहा जाएगा कि उसने धर्म का आधार ही तोड़ दिया। जड़ कट जाने पर किसी पेड़ में उगने वाले फूलों और फलों की आशा नहीं रखी जा सकती, इसी प्रकार कुकर्मी धर्मात्मा को उन समस्त लाभों से वंचित रहना पड़ता है, जो धर्ममार्गों पर निष्ठापूर्वक चलने वाले को अनायास ही मिलते रहते हैं।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म, विश्व विचारकों की दृष्टि में

जीवन उतना जटिल नहीं है जितना कि बन गया है या बना दिया गया है। हँसी-खुशी की संभावनाओं से वह भरा-पूरा है। शरीर और मन की संरचना इस प्रकार हुई है कि वह बाहर के तनिक से साधनों की सुविधा प्राप्त हो जाने पर सहज ही स्वस्थ और सुखी रह सकता है। अति स्वल्प साधनों से अन्य जीवधारी अपना संतोषपूर्ण व्यवस्था क्रम चलाते रहते हैं, न उन्हें रुग्णता सताती है और न खिन्नता। यदि उन्हें सताया न जाए तो शरीरयात्रा की प्रचुर परिमाण में उपलब्ध साधन सामग्री से ही अपना काम चला लेते हैं और हँसी-खुशी के दिन काटते हैं।

मनुष्य को यह सुविधा और भी अधिक मात्रा में उपलब्ध है। उसका अस्तित्व एवं व्यक्तित्व इतना समर्थ है कि न केवल शारीरिक सुविधा की सामग्री वरन मानसिक प्रसन्नता की परिस्थिति भी स्वल्प प्रयत्न से प्रचुर मात्रा में प्राप्त कर सकता है। इतने पर भी देखा यह जाता है कि मनुष्य खिन्नता और अतृप्ति से ही घिरा रहता है। आधियों और व्याधियों की घटाएँ उस पर छाई रहती हैं।

सौभाग्य जैसे समस्त साधन प्राप्त होने पर भी दुर्भाग्य की जलन में झुलसते रहने के पीछे एक ही कारण ढूँढ़ा जा सकता है कि सहज सरल रीति-नीति को छोड़कर हम जाल-जंजाल भरी विद्रूप विडंबनाओं में उलझ गए और अपना मार्ग स्वयं कंटकाकीर्ण बना लिया। सहज स्वाभाविकता का नाम है—धर्म और उसके विपरीत आचरण को अधर्म कहते हैं। वैयक्तिक और सामाजिक कर्त्तव्यों को जो सही तरह समझता है और सही तरह पालन करता है, उसे स्वल्प साधनों में भी तुष्ट-पुष्ट और प्रगतिशील देखा जा सकेगा। धर्म की धारणा निश्चित रूप से सुख-शांति के प्रतिफल प्रदान करती है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऐलिस ने कहा है—"मनुष्य के मन और शरीर को आधि-व्याधियों ने इसलिए घेरा है कि उसे धर्म का समुचित संरक्षण नहीं मिला। यदि आहार-निद्रा की तरह धर्म को भी जीवन की अनिवार्य आवश्यकता माना गया होता तो हम शोक-संतापों की विविधविध व्यथाएँ सहने से सहज ही बच सकते थे।"

संत आगस्टाइन ने मानव की मानव के प्रति कर्त्तव्य घोषणा को धर्म माना है। सेंटपाल का कथन है कि पतन के गर्त से उत्थान के शिखर पर चढ़ने की सीढ़ी को धर्म कहना उपयुक्त होगा।

हेम्रोज ने धर्म को दो धाराओं में विभक्त किया है—एक आस्थामूलक दूसरी व्यवहारपरक। आस्था की स्थापना अध्यात्म के आधार पर होती है और आचरण-व्यवहार का समीकरण धर्माचरण पक्ष द्वारा किया जाता है। दोनों के समन्वय को धर्म कह सकते हैं। ईश्वरवाद के सहारे ही धर्म सिद्धांतों की व्याख्या और पुष्टि की जा सकती है।

विलियम वेक ने धर्म को आत्मा का कवित्व कहा है। वे कहते हैं कि पुराणों के अलंकार में परियों की गाथाएँ और जादुई किंवदंतियाँ भरी पड़ी हैं। इन सबका सार निष्कर्ष यह है कि आत्मा की भाव-सरिता यदि उत्कृष्टता की दिशा में बह निकले तो उसका प्रतिफल व्यक्ति और समाज के लिए उतना ही सरल और आकर्षक हो सकता है जैसा कि देवताओं का सौंदर्य, वैभव और कर्तृत्व।

ल्यूवा ने धर्म को एक सनातन राजमार्ग बताया है, जिस पर धीरे-धीरे चलते हुए मनुष्य जाति विकास के वर्तमान स्तर तक पहुँचने में समर्थ हुई है और भविष्य में अधिक कुछ पाने की आशा कर सकती है।

प्लांटिस ने कहा—"धर्म की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि वह मनुष्य के मरणोत्तर जीवन का विश्वास कराती है और दुष्कर्म एवं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्कर्म के बीच का अंतर बताते हुए उसके दुष्परिणाम-सत्परिणाम का निश्चय कराती है। यदि यह मान्यता मनुष्य समाज में से निकल जाए, वह अपने को नाशवान और मर्यादाओं से स्वतंत्र मान बैठे तो फिर यहाँ हर किसी का व्यवहार पैशाचिक स्तर का हो उठेगा। धर्म का अस्तित्व और मनुष्य जाति का अस्तित्व दोनों एक-दूसरे के साथ अत्यंत सघनता के साथ जुड़े हुए हैं।''

फ्रेजर धर्म को ईश्वरीय आदेश और आत्म तृप्ति का आधार मानते थे। कोमटे की मान्यता थी कि अंतरात्मा के मृदुल रस को बाह्य संसार के साथ समन्वित करके कैसे बहुमुखी सरसता उत्पन्न की जा सकती है? इस आवश्यकता की पूर्ति कर सकने वाली कला का नाम ही धर्म है।

संत डाइनाइसिअस का निरूपण यह था कि अदृश्य जगत और दृश्य जगत के परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाली धाराओं को एकात्म बना देने वाले महासमुद्र का नाम धर्म है। उसके आधार पर ही विरोध को सहयोग में एवं पृथकता को एकता में बदला जा सकता है।

मैक्समूलर ने अपनी 'एन इंट्रोडक्शन टू दी साइंस आफ रिलीजन' पुस्तक में धर्म की विवेचना करते हुए लिखा है—''धर्म अंतरात्मा की पुकार है, जो तर्क और जानकारियों को प्रभावित तो करती है, पर उससे प्रभावित नहीं होती। उसका आधार अतींद्रिय है। दिव्य चेतना ही हमें धर्मनिष्ठा अपनाने के लिए प्रेरित करती है।''

विलियम जेम्स ने लिखा है—''धर्म एक दूरगामी चिंतन है जिससे व्यक्ति की सामाजिक परिस्थितियों की अपेक्षा समष्टि की सर्वांगीण और सर्वकालीन आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाता है।''

अलबर्ट का कथन है—''धर्म हमारे भौतिक जीवन को सुखी बनाने में सहायक हो सकता है, पर भौतिक सुखों के लिए धर्म का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपयोग करना न तो उचित होगा और न संभव। धर्म एक आध्यात्मिक भूख है जिसे तृप्त करने के लिए भौतिक कष्ट भी सहने पड़ सकते हैं।''

पास्कल ने कहा है—''हृदय के विवेक से धर्म का उदय होता है। उसे मात्र तर्कों की वैसाखी लगाकर खड़ा नहीं किया जा सकता।''

कांट ने धर्म की परिभाषा करते हुए उसे ऐसी मानवी कर्त्तव्य-निष्ठा बताया है जो मस्तिष्क तक सीमित न रहकर अंत:करण में, निष्ठा में घनीभूत हो गई हो।

तत्त्वदर्शियों के उपर्युक्त अभिवचनों में धर्म शब्द के अंतर्गत जिस आधार की चर्चा की गई है, उसे उत्कृष्टतावादी चिंतन और आदर्शवादी कर्तृत्व के अंतर्गत ही गिना-समझा जाना चाहिए। कर्त्तव्य-परायणता का ही दूसरा नाम धर्म है। शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक और सार्वभौमिक जिम्मेदारियों से मनुष्य की उच्छृंखलता को मर्यादित किया गया है। उसे अपने स्तर के अनुरूप सृष्टि-संतुलन के प्रति अपनी जिम्मेदारियाँ भी निभानी होती हैं। धर्म का प्रयोजन इसी मानवोचित शालीनता एवं कर्त्तव्यनिष्ठा को अक्षुण्ण बनाए रखना है। संस्कृति और संप्रदायों में क्षेत्रीय और सामयिक परिस्थितियों के अनुसार आचार-व्यवहार की व्यवस्था रहती है। इसलिए परिस्थिति के अनुसार उनमें बार-बार सुधार-परिवर्तन करना पड़ता है, पर धर्म के बारे में ऐसी बात नहीं है, वह शाश्वत और सनातन है। उसका स्वरूप सदाचार, मर्यादा और लोकहित के रूप में चिरअतीत से ही निर्धारित किया जा चुका है। उसमें परिवर्तन की आवश्यकता कभी भी-किसी को भी नहीं पड़ सकती।

सुख-शांति के लिए अधिक सुविधाजनक साधनों की खोज में विज्ञान और शासन के प्रयास जुटे रहते हैं, पर यह भुला नहीं दिया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जाना चाहिए कि मनुष्य एक चेतनात्मक, परिपूर्ण सत्ता है। आनंद का उद्‌गम भीतर है। वही अंतर्ज्योति जब बाह्य जगत पर प्रतिबिंबित होती है तो सौंदर्य, संतोष एवं रसानुभूति का अनुभव होता है। विचारणा का स्तर ऊँचा उठाए बिना विपुल साधन-संपत्ति होने पर भी न आनंद मिल सकेगा, न उल्लास और न संतोष। विचारणा को उत्कृष्टता के स्तर तक उठाने और सुदृढ़ बनाने में धर्म का तत्त्वज्ञान ही समर्थ हो सकता है। भौतिक विज्ञान इस प्रयोजन की पूर्ति में बहुत अधिक सहायता नहीं कर सकता।

'मार्डन मैन इन सर्च ऑफ रिलीजन' ग्रंथ में यह प्रतिपादन किया गया है कि विज्ञान में भी किसी वस्तु का ज्ञान प्राप्त करने के लिए विशिष्ट यंत्र ही उपयोगी होते हैं। न तो सूक्ष्मदर्शक यंत्र द्वारा दूरस्थ तारा दिखाई देता है और न ही सर्जन की छुरी से मलेरिया के अत्यंत सूक्ष्म परमाणु देखे जा सकते हैं। इसी प्रकार बुद्धि के द्वारा आध्यात्मिक सत्यों का परीक्षण नहीं किया जा सकता, भले ही वह कितनी ही तीक्ष्ण क्यों न हो !

विज्ञान द्वारा सुविधा-साधनों की वृद्धि की दिशा में किए गए प्रयासों से समुचित लाभ तभी उठाया जा सकेगा, जब भावना एवं दृष्टिकोण को ऊँचा उठा सकने में समर्थ धर्मतत्त्व को समझने और समझाने के लिए भी समानांतर प्रयास किया जाए।

'ईवोलूशन इन साइंस एंड रिलीजन' के लेखक का कथन है—"विज्ञान ने शक्ति को पदार्थ के रूप में और पदार्थ को शक्ति के रूप में परिवर्तित करके यह सिद्ध कर दिया है कि सूक्ष्म को स्थूल में और स्थूल को सूक्ष्म में बदला जा सकता है।"

"दर्शन भी यह सिद्ध करता रहा है कि विचार को घटना के रूप में विकसित किया जा सकता है और घटनाएँ विचारों का निर्माण कर सकने में समर्थ हैं।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पदार्थ से सुख मिलता है—यह सिद्धांत भी अपने स्थान पर ठीक है। पर गलत यह भी नहीं कि यदि उत्कृष्ट चिंतन उपलब्ध साधनों की मात्रा अधिक न होने पर भी हस्तगत है, तो उससे इतना आनंद उठाया जा सकता है जो परिपूर्ण संतोष प्रदान कर सके।

सामाजिक सुव्यवस्था के लिए धर्मधारणा से बढ़कर और कोई साधन नहीं हो सकता। बलपूर्वक अवांछनीयता पर नियंत्रण करने में शासन की अधिकांश क्षमता नष्ट होती है फिर भी कुछ लाभदायक समाधान नहीं मिलता। यदि धर्मधारणा को प्रखर और समुन्नत बना सकने योग्य वातावरण उत्पन्न किया जा सके, उचित साधन जुटाए जा सकें तो निस्संदेह सामाजिक सुव्यवस्था और राष्ट्रीय समर्पण का प्रयोजन सहज ही पूरा हो सकता है। सार्वभौम और सर्वकालीन सुख-शांति की स्थापना धर्मधारणा को सुदृढ़ और समुन्नत बना कर ही की जा सकती है।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म का स्वरूप और उसका उपयोग

जीवन में स्थायी सुख-शांति लाने के लिए धर्म का पालन करना बहुत आवश्यक है। जनसाधारण की सामान्य धारणा के अनुसार धर्म कोई विशिष्ट कर्मकांड नहीं है। धर्म का अर्थ पूजा-पाठ अथवा साधना-उपासना ही नहीं है। यह सारे कर्मकांड जीवन को धार्मिक पथ पर चलाने और उसको अभ्यस्त बनाने के साधन मात्र हैं। पवित्र कर्मकांड करने से मनुष्य के कुसंस्कार तथा अहितकर अभ्यास मिटते हैं और उनके स्थान पर सुसंस्कार एवं कल्याणपूर्ण अभ्यासों का समावेश होता है।

धर्म तो मनुष्य जीवन की वह सामान्य पद्धति है जिसको अपनाकर चलने से एक चिरस्थायी सुख-शांति की उपलब्धि होती है। पग-पग पर विग्रह तथा विनाश कारणों का समाधान होता है। धर्म का अवलंबन लेकर चलने से जीवन दिन-दिन उन्नति की ओर अग्रसर होता चलता है। उन्नतिपूर्ण जीवनयापन करना ही मनुष्यता है, इसके विपरीत अधोगामी जीवन जीना और कुछ भी हो, मानवता तो नहीं है।

भारतीय मनीषियों ने अध्ययन, चिंतन और अनुभव के आधार पर सुख-शांतिपूर्ण जीवनयापन की जो पद्धति खोज निकाली उसको धर्म का नाम देकर दस लक्षणों अथवा कर्त्तव्यों की सीमा में समाहित कर दिया है। जो मनुष्य इन दस गुणों अथवा कर्त्तव्यों को अपनाकर चलता है, वह न केवल स्वयं सुखी रहता है, अपितु दूसरों के लिए भी सुख का हेतु बनता है।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्॥

— (मनु. ६.९२)

अर्थात "धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इंद्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्य एवं अक्रोध यह धर्म के दस लक्षण हैं अर्थात यह दस ऐसे कर्त्तव्य

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अथवा गुण हैं जो मनुष्य को महान बनाकर सुख-शांति की उपलब्धि कराते हैं।

ये कर्त्तव्य केवल धर्म के ही लक्षण नहीं, बल्कि सच्ची मनुष्यता के पावन सोपान और विश्व-कल्याण के मूलमंत्र भी हैं।

इन दस लक्षणों को अपनाकर चलने वाले को किसी धर्म विशेष का अनुयायी मानना संकुचित दृष्टिकोण तथा संकीर्ण विचारधारा का परिचय देना है। वह किसी जाति विशेष के लिए सांप्रदायिक निर्देश नहीं, अपितु संपूर्ण मानवता के लिए मांगलिक निष्कर्ष है जिसको सार्वभौम भावना रखने वाले भारतीय चिंतकों ने संपूर्ण जीवन का मंथन करके निकाला है। यह जीवनतथ्य किसी देश, जाति, राष्ट्र अथवा संप्रदाय की निधि नहीं है। इस विभूति में समग्र संसार का अधिकार है जो चाहे ग्रहण कर सकता है और लाभ उठा सकता है।

धर्म के ये दस लक्षण अंधविश्वास के विषय नहीं हैं, बल्कि तर्क और अनुभव की कसौटी पर परखे हुए मानवजीवन के शाश्वत सत्य हैं। संसार में कितने ही धर्म, मजहब, पंथ और संप्रदाय क्यों न चला करें और क्यों न कितने ही पीर-पैगंबर, संत-महंत, साधु अथवा महात्मा पैदा हो जाएँ—

मानव-कल्याण का निर्देश करते समय इस त्रयकालिक दशक से बाहर नहीं जा सकते। वे जो कुछ नया-पुराना कहेंगे, वह इन्हीं के इर्द-गिर्द घूमती हुई इनकी ही शाखाएँ-प्रशाखाएँ होंगी।

इन धार्मिक दशक को जीवन में उतारते समय विवेचनापूर्वक इनका स्वरूप समझ लेना आवश्यक है।

'धृति' का अर्थ है—धैर्य। मनुष्य एक कर्मशील प्राणी है। इस कर्म-प्रधान विश्व में बिना कर्म किए, बिना कुछ काम किए, किसी की गुजर नहीं हो सकती। अथवा यों कहना चाहिए कि वह जीवित नहीं रह सकता। अतएव मनुष्य कुछ न कुछ करता ही रहता है। अपना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विकास, परिवार का पालन, समाज की सेवा आदि सब बातें कर्म पर आधारित हैं। यदि मनुष्य क्रियाशील न रहा होता तो आज संसार को जिस उन्नत दशा में देखते हैं वह वैसा न होता, बल्कि चारों ओर निर्जीवता, जड़ता और उजड़ापन वर्तमान होता। इन ऊँचे-ऊँचे भवनों, समुन्नत कला-कौशलों के केंद्रों, साहित्य और शिल्पों के स्थान पर सब कुछ ऊबड़-खाबड़ ही रहा होता और जीवन की चहल-पहल के स्थान पर मृत्यु जैसा सन्नाटा छाया रहता। हम संसार में आज जो कुछ भी सत्यं-शिवं-सुंदरम् देख रहे हैं, वह सब मनुष्य की क्रियाशीलता का ही फल है।

कोई भी काम करने में धैर्य की नितांत आवश्यकता है। जो धैर्यवान है, वह कर्म करने से पहले उसके शुभाशुभ परिणाम पर विचार कर सकता है, उसको सफल बनाने के लिए मार्ग निर्धारित कर सकता है। अपने धर्म के सत्-असत् एवं उपयोगिता-अनुपयोगिता पर सोच सकता है। इसके विपरीत जो अधैर्यवान है, आवेश अथवा उद्वेगपूर्ण है, वह न तो कर्म की इन आवश्यक भूमिकाओं पर विचार कर सकता है और न दक्षता प्राप्त कर सकता है। उद्वेगपूर्वक किया हुआ कार्य प्राय: न तो अपनी पूर्णता को प्राप्त होता है और न वांछित फल का वाहक ही बनता है। वह तो अस्त-व्यस्त क्रिया-कलाप की तरह एक निरर्थक श्रम ही होता है।

अधैर्य मनुष्य का बहुत बड़ा दुर्गुण है। अधीर व्यक्ति में अपेक्षित गंभीरता का अभाव ही रहता है जिससे वह चपलता के कारण समाज में उपहास, उपेक्षा और निंदा का पात्र बनता है। अधीर व्यक्ति के मन, बुद्धि स्थिर नहीं रहते। वह न किसी विषय में ठीक से सोच सकता है और न कर्तृत्व अथवा अकर्तृत्व का निर्णय कर सकता है। अधैर्यवान व्यक्ति अदक्षता, अस्त-व्यस्तता, अनिर्णायकता एवं अक्षमता के कारण जीवन के हर क्षेत्र में असफल होकर दु:ख भोगता है। इसके विपरीत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो धृतिवान है, वह जिस कार्य को पकड़ता है उसे पूर्ण मनोयोग, विवेक, बुद्धि और समग्र शक्ति लगाकर पूरा किए बिना नहीं रहता। धैर्यवान व्यक्ति कर्म करके उसके फल की प्रतीक्षा में व्यग्र नहीं होता बल्कि फलासक्ति से रहित होकर कार्य किया करता है, जिससे वह कर्मों में न तो क्लांति अनुभव करता है और न सफलता-असफलता से आंदोलित होता है। ऐसे धृतिवर कर्मयोगी ही जीवन में अपूर्व सफलता पाकर सुख-शांति का लाभ प्राप्त करते हैं।

''क्षमा'' का अर्थ है—निर्द्वेष होना। निर्द्वेष व्यक्ति ही संसार में अजातशत्रु बनता है। जो अजातशत्रु है, पूरा संसार उसका हितैषी रहता है। उसे हर समय हर स्थिति में प्रत्येक व्यक्ति की सद्भावना तथा सहयोग मिलता रहता है। क्षमावान व्यक्ति हर स्थान पर स्नेहपूर्ण सम्मान का पात्र बना रहता है।

क्षमा धारण करना कायरता अथवा दुर्बलता का चिह्न नहीं, बल्कि यह स्थिर बुद्धि, गंभीर मन और उन्नत आत्मा का लक्षण है। अपराध करने पर भी किसी को क्षमा कर देना, उससे प्रतिशोध, प्रतिकार एवं प्रतिहिंसा की भावना न रखना, किसी कायर हृदय की क्षमता के बाहर है। अपराधी के प्रति निर्द्वेष रह सकना-किसी धीर-वीर मनस्वी के लिए ही साध्य है। जिसके हृदय में विद्वेष नहीं, जिसका कोई शत्रु नहीं और जिसको संसार का स्नेह एवं सौहार्द्र प्राप्त है, ऐसे क्षमाशील व्यक्ति को सुख-शांति न मिले, यह त्रिकाल में असंभव है।

'दम' का अर्थ है—दमन करने, समाधान करने की योग्यता। इस दमन का आशय है—उच्छृंखल मन और अनियंत्रित कामनाओं का नियंत्रण करना। योग्यतापूर्वक विग्रह, विद्वेष तथा वैमनस्य का समाधान करना। क्या बाह्य और क्या आंतरिक, विग्रह एवं विकारों का समाधान अनुग्रहपूर्वक ही किया जा सकता है। अविचारतापूर्ण बलात्कार से किसी बुराई का समाधान संभव नहीं। क्रिया-प्रतिक्रियाओं के वशीभूत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होकर जो दमन किया जाता है, वह अत्याचार में बदल जाता है और अत्याचारी के नसीब में सुख-शांति की कोई रेखा नहीं होती। अग्नि का समाधान जल और द्वेष का सहृदयता है। दमनशील व्यक्ति आत्मा के प्रति दयालु रहता है, कुविचारों तथा कुकामनाओं से आत्मा की रक्षा करता है। मन की अनियंत्रित चंचलता में शक्ति को क्षय नहीं कर देता। मन, बुद्धि और शरीर पर समुचित नियंत्रण रखकर उन्हें शक्तिशाली बनने का अवसर देता है। हर दृष्टि से शक्तिशाली बनकर दमनशील संयमी संसार के सारे सुखों का अधिकारी बनता है।

'**अस्तेय**' का अर्थ है—अवंचकता होना। जिसके मन में कोई चोर नहीं रहता, वह दूसरों के प्रति ही नहीं बल्कि अपने प्रति भी सच्चा और ईमानदार रहता है। जहाँ किसी को धोखा न देना उसके प्रति हितकारी है, वहाँ वंचकता का भाव न होना अपने प्रति कल्याणकारक है। जो वंचक नहीं, झूठा नहीं वह संसार में सबका विश्वास पा लेता है। अवंचक व्यक्ति निरपराध रहकर निर्विरोध, निर्विकार, निर्द्वंद्व एवं निर्भर जीवनयापन करता हुआ सुख-शांति का अधिकारी बनता है। अस्तेयतापूर्ण व्यक्ति की आत्मा स्वस्थ तथा सबल होकर अक्षय आनंद की स्रोत बन जाती है।

'**शौच**' का अर्थ है—पवित्रता। पवित्र मन, प्राण वाला व्यक्ति शरीर से भी स्वस्थ रहता है। उसे रोग, शोक और पाप-ताप रूपी शत्रु नहीं घेरते। पवित्रमना व्यक्ति स्वच्छ और समुन्नत दशा में रहता है। उसे मलिनता और गंदगी नहीं भाती। वह शिव एवं सुंदर होने का अनुयायी होने से कलापूर्ण जीवन का आनंद प्राप्त करता है।

'**इंद्रियनिग्रह**' का अर्थ है—वासनाओं से अपनी रक्षा करना। जिसकी इंद्रियाँ वश में हैं, वह मिताहारी, मितव्ययी एवं मितभाषी होता है। जिसमें इन तीन गुणों का विकास हो जाता है, वह संसार के बहुत से दुर्गुणों से बच जाता है। मिताहार रोग से, मितव्ययता दरिद्रता से और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मितभाषण निरर्थक विग्रह तथा वाद-विवाद से अपनी रक्षा करता है। जो इंद्रियों का दास है, वह जीवन का सारा सार शीघ्र ही खोकर खोखला हो जाता है, फिर उसके पास लोलुपता तथा लिप्सा के अतिरिक्त कुछ भी शेष नहीं रहता। जहाँ अनियंत्रित इंद्रिय व्यक्ति दुःख-दारिद्र्य से ग्रसित अल्पजीवी होता है, वहाँ इंद्रियनिग्रही व्यक्ति सुखपूर्ण जीवन का अधिकारी होता है।

'धीः' मनुष्य की विवेक बुद्धि को कहते हैं। जिसका विवेक प्रबुद्ध है उस पर कोई विपत्ति नहीं आती और यदि संयोगवश आ भी जाती है तो विवेकी व्यक्ति उसका शीघ्र समाधान कर लेता है। जो विवेकवान है, उसे किसी का भय नहीं। विवेक मनुष्य को सदैव सत्कर्मों में ही प्रवृत्त रखता है और सत्कर्मों में लगे हुए व्यक्ति के पास सुख-शांति की कमी नहीं रहती।

'विद्या' का अर्थ केवल शिक्षा ही नहीं, ज्ञान भी है। जिस व्यक्ति में विद्या नहीं, वह बहुधा अविनयी हो होता है। धृष्ट व्यक्ति का न कहीं मान होता है और न उसे कोई चाहता है। संसार का अनंत ऐश्वर्य पा लेने वाला व्यक्ति यदि अज्ञानी है तो वह अपने वैभव की न तो रक्षा कर सकता है और न सदुपयोग। ज्ञान के अभाव में सारे गुण, सर्व शक्तियाँ पंगु होकर निकम्मी हो जाती हैं। अज्ञान मनुष्य जीवन में निविड़ अंधकार के तुल्य है। अज्ञानी व्यक्ति अँधेरे में भटकते हुए के समान पग-पग पर ठोकर खाता रहता है। जो विद्यावान है, ज्ञानवान है वह निर्धन रहकर भी सुख-शांतिपूर्ण आत्मजीवन व्यतीत कर सकता है।

'सत्य' का अर्थ है—किसी भ्रम अथवा भूलों में न भटकना। जो व्यक्ति सत्य का उपासक है, वह किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के बाह्य रूप से प्रभावित होकर उसे अपनाने का प्रयत्न नहीं करता। सत्यवादी व्यक्तित्व की ही खोज में रहता है और प्रत्येक वस्तु के यथार्थ रूप को पाने का प्रयास ही किया करता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्य के उपासक की वाणी में तेज और कर्मों में एक सार्थक दक्षता रहती है। वह न अहितकर बोलता है और न कोई अकल्याणक कार्य करता है। सत्य जीवन का मूल मंत्र है। सत्य का आधार लेकर चलने वाले की सफलता निश्चित है।

'अक्रोध' का अर्थ है—उत्तेजित न होना। सदैव ही शांत एवं आवेगरहित रहना। जिसने क्रोध को जीत लिया उसने मानो संसार को जीत लिया। क्रोध मनुष्य को अंधा कर देता है। क्रोध एवं आवेग आने पर मनुष्य आगा-पीछा नहीं सोच पाता और अकरणीय कार्य कर बैठता है। क्रोधी की बुद्धि क्रोध की आग में जलकर नष्ट हो जाती है और बुद्धि का विनाश हो जाने से मनुष्य का विनाश निश्चित ही है।

इसके विपरीत जो शांत है, आवेगरहित है उसे अनिष्ट का कोई भय नहीं। अक्रोधी व्यक्ति शीतल जल की भाँति स्वयं भी शीतल रहता है और दूसरों को भी शीतल रखता है।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधर्म और पापाचार से बचिए

सुखप्राप्ति ही मनुष्य की मूलभूत आकांक्षा है। उसका सारा जीवन प्राय: इसी के प्रयत्न में बीतता है। जिस वस्तु-परिस्थिति में मनुष्य को सुख दिखाई देता है, उसी की प्राप्ति में ही उसकी सारी प्रवृत्तियाँ, सारी चेष्टाएँ काम किया करती हैं। पर अधिकांश व्यक्ति सुखप्राप्ति के सच्चे उपाय को जान नहीं पाते हैं, अज्ञानावश वह तात्कालिक सुखोपभोग की कामना से प्राय: दूसरों के हित का भी ध्यान नहीं रखते। अधर्मी लोग सुखप्राप्ति स्वार्थपूर्ण दृष्टिकोण के द्वारा ही करते हैं, किंतु इससे कठिन समस्याएँ, विवाद और बुराइयाँ उठ खड़ी होती हैं और फलस्वरूप मूलभूत आकांक्षा का पतन हो जाता है। सुख ढूँढ़ने चलते हैं, फँस जाते हैं—विपत्तियों के जंजाल में।

सुख का आधार धर्म और सदाचार है। इसके बिना मनुष्य वास्तविक सुख प्राप्त नहीं कर सकता। शास्त्रकार का उपदेश है—

सुखार्था: सर्वभूतानां मता: सर्वा: प्रवृत्तय:।
सुखं च न बिना धर्मात् तस्माद्धर्मपरो भवेत्॥

अर्थात "सुख सभी चाहते हैं, सबकी प्रवृत्तियाँ भी इसीलिए होती हैं, पर यह कम ही जानते हैं कि धर्म के बिना सुख प्राप्त करना असंभव ही है।" इसीलिए अपनी चेष्टाओं की बड़ी सावधानी से देख-रेख करते रहना चाहिए।

पाप वृत्तियाँ और देवत्व, दोनों ही मनुष्य के अंत:करण में निवास करते हैं। आसुरी शक्तियों में आकर्षण और तात्कालिक प्रलोभन का भाव अधिक होता है, इससे मनुष्य बलात् बुराइयों की ओर खिंच जाता है। यह बुराइयाँ जब स्वभाव में गहराई तक प्रवेश कर जाती हैं तो वे संस्कार बन जाती हैं। यह कुसंस्कार ही मनुष्य को जन्म-जन्मांतरों तक जन्म-मरण और सांसारिक दु:खों में प्रवृत्त किए रहते हैं। मनुष्य बार-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बार पाप करता है, बार-बार दुःख पाता है। इस भ्रमजाल में वह अपने वास्तविक लक्ष्य को भूल जाता है, परिणाम यह होता है कि मनुष्य जीवन मिलने पर भी वह सामान्य प्राणियों जैसे ही आचरण करता रहता है। उसका विचार, उसका विवेक, उसकी सद्बुद्धि अधर्माचार के कारागार में बँधी पड़ी रहती है। बेचारा जीव तरह-तरह के दुःख सहन करता हुआ भाग्य और ईश्वर को दोष लगाता रहता है।

विषयों में प्रवृत्ति के कारण ही प्रायः लोग पापकर्म करते हैं। इसलिए भगवान कृष्ण ने यह निर्देश किया है—

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति॥
प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते॥

— (गीता-२.६४.६५)

अर्थात "अपने अंतःकरण में उठने वाली दुष्प्रवृत्तियों के वशीभूत न होकर, स्वच्छंद अंतःकरण वाले बनिए। जब तक ऐसा नहीं करेंगे, राग-द्वेष से तब तक निवृत्ति नहीं होगी। जब तुम इंद्रियों का स्वामित्व प्राप्त कर लोगे तभी प्रसन्नता प्राप्त होगी। इस दिव्य आनंद के द्वारा ही जीवन का सच्चा सुख प्राप्त कर सकोगे।"

पाप और अधर्म की दुष्प्रवृत्तियों से जो समय रहते सावधान हो गया वही सच्चा साधक, सच्चा आत्मवादी कहा जा सकता है। मोह-माया के क्षुद्र जीवन से ऊपर उठने के लिए सदाचार आवश्यक है। जो केवल अपरिपक्व, अस्थिर, क्षुद्र और छोटी-छोटी बातों में जीवन गँवाते रहते हैं, उन्हें अज्ञानी ही माना जाएगा। उनको इस लोक में दुःख भोगने पड़ते हैं और पारलौकिक अनुभूतियों से भी वंचित रहना पड़ता है।

प्रसिद्ध फ्रांसीसी विद्वान बर्थेलो ने एक बार अपने प्रवचन में कहा—"मनुष्य जाति की सर्वोपरि प्रेरक शक्तियाँ हैं—शक्ति और धर्म।" आत्मा का अस्तित्व इन्हीं से माना जा सकता है। मनुष्य को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिस सुख की कामना है, वह यथार्थ में कोई बाह्य वस्तु या परिस्थिति नहीं है। मनुष्य अपनी रुचि के अनुसार जिन वस्तुओं में तृप्ति देखता है, उन्हीं को सुख का साधन मान लेता है। यहाँ यह भूल जाते हैं कि हमारा मूल विषय निजत्व का ज्ञान प्राप्त करना है। अर्थात हम तब तक सुख प्राप्त नहीं कर सकते, जब तक यह नहीं जान लेते कि हम क्या हैं, कौन हैं और हमारा शाश्वत स्वरूप क्या है? यह अज्ञानता ही दु:ख का कारण है, क्योंकि लोग पाप और दुष्कर्म अज्ञानवश ही करते हैं। आत्मा की सही स्थिति का ज्ञान होते ही मनुष्य की चित्तवृत्तियाँ शुद्ध और पवित्र होने लगती हैं, इसलिए सुखप्राप्ति के लिए भी शुद्ध जीवन की आवश्यकता पर अधिक जोर दिया जाता है।

दु:ख जिसे कोई नहीं चाहता—वह मनुष्यों के अधर्म और पाप कर्मों का परिणाम होता है। सुख की प्राप्ति सुयोग्य आचरण से होती है और पाप-संपादन से त्रास बढ़ता है। पर मनुष्य सदैव इससे विपरीत ही आचरण करता है, इसलिए शास्त्रकार ने निर्देश दिया है—

पुण्यस्य फलमिच्छन्ति पुण्यं नेच्छन्ति मानवा:।
न पापफलमिच्छन्ति पापं कुर्वन्ति यत्नत:॥

अर्थात "मनुष्य सुखों की, पुण्यफल की इच्छा तो करता है, किंतु स्वयं पुण्य अर्जित नहीं करता है। पाप के दुष्परिणामों से डरता है, किंतु यत्नपूर्वक करता दुष्कर्म ही है।" ऐसी स्थिति रहते हुए भला किसी को सुख मिल सकता है? आम का फल आम होता है, बबूल नहीं। इसलिए सुख वही प्राप्त कर सकते हैं, जिनकी प्रवृत्तियाँ भी सन्मार्गगामी होती हैं।

मनुष्य संकुचित दृष्टिकोण के कारण पाप करता है। तत्काल के लाभ प्राप्त करने के लिए जब दूरगामी परिणाम दिखाई नहीं देते, तभी मनुष्य दुष्कर्म करता है। चोरी करने वाला यदि यह जान ले कि उसे इसके बदले में जेल जाना पड़ेगा, पकड़े जाने पर तरह-तरह के दंड

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिए जा सकते हैं, तो यह संभव है कि उस दुष्कर्म से बच जाए। किंतु संकुचित दृष्टिकोण के कारण वह यह समझता है कि उसे कोई नहीं देखता, किंतु उसका हृदयस्थ आत्मा इस दुष्कृत्य को देखती रहती है, जो बाद में उसके पश्चात्ताप, भय, ग्लानि और विक्षोभ का कारण बनता है। भगवान मनु ने लिखा है—

मन्यते वै पापकृतो न कश्चित्पश्यतीति नः।
तांस्तु देवाः प्रपश्यन्ति स्वयैवान्तर पूरुषः॥

— (मनु. ८.८५)

अर्थात "पाप करने वालों! यह न समझो कि तुम्हें कोई देख नहीं रहा है। तुम्हारे हृदय में बैठी हुई तुम्हारी आत्मा ही सब कुछ देख रही है।" अतः मनुष्य सबसे प्रथम इस सत्य को स्वीकार करे कि संसार के सभी मनुष्य समान हैं। सबके साथ न्याय का बर्ताव करना चाहिए। जब तक ऐसी धर्मबुद्धि नहीं तब तक मनुष्य बुरे कर्म ही करता है और उनके दुष्परिणाम भोगता रहता है।

सच्चे धर्म के सिद्धांत सभी के लिए इतने स्वाभाविक हैं कि जैसे ही उन्हें लोगों के आगे रखा जाता है, लोग उन्हें इस प्रकार स्वीकार कर लेते हैं, जैसे इनसे बहुत समय से परिचित रहे हैं। धर्म आत्मा की आध्यात्मिक प्यास है। उसे धर्म में ही सुख मिलता है, इसलिए जब भी वह अपने शुद्ध स्वरूप को समझ पाता है, तभी से उसके शुद्ध जीवन की प्रशस्ति प्रारंभ हो जाती है। संप्रदायवाद की विविधता में भी धर्म का स्वरूप अविच्छिन्न है। धर्म वह है जो मनुष्य को क्षुद्र जीवन से उठाकर महान और आत्मदर्शी बनाता है।

इस प्रकार जो व्यक्ति अपने जीवन में धर्म-लक्षण कहे जाने वाले इन दस गुणों का समावेश कर लेता है, उसकी सुख-शांति में कोई बाधा नहीं पड़ती। भले-बुरे कर्मों के द्वारा मनुष्य अपने ईश्वरीय अंश को चाहे तो बढ़ा ले, चाहे घटा दे। ईश्वरीय-ज्योति को विकसित करने के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए वासनाओं का दमन करना पड़ता है और अपने अंदर प्रेमभाव, अहिंसा और उदारता के सद्‌गुणों का जागरण करना होता है। यह सिद्धांत पूर्णतया सार्वधार्मिक और सार्वभौमिक है। मत-मतांतर का इसमें किसी प्रकार का झगड़ा नहीं है।

धर्म सिखाता है कि संसार के समस्त पदार्थों का परमात्मा से क्या संबंध है? धर्म मनुष्य की आंतरिक शक्तियों को जगाता है। सही ज्ञान और आंतरिक शक्तियों के समन्वय से ही मनुष्य का जीवन सर्वांगपूर्ण बनता है।

मना पापसंकल्प सोडूनि द्यावा।
ममा सत्यसंकल्प जीवो धावा॥

अर्थात "हे मन ! तू अपने पाप-संकल्पों को त्यागकर सत्य-संकल्प धारण कर। यह निर्विवाद सत्य है, कि हमारा जीवनलक्ष्य बाह्य सुखोपभोग तक ही सीमित नहीं है।" अपना एक सात्त्विक लक्ष्य भी है, वह है—आत्मज्ञान और आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति। इस लक्ष्य को पूरा करना हो तो अधर्म और पापाचार से बचकर सत्य-संकल्पों को ही जीवन में प्रथम स्थान देना होगा।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म की सच्ची भावना का प्रवर्तन हो

आज संसार की अशांति का मूल कारण धार्मिक अनास्था है। एक नई बर्बरता जिसने प्राचीन धर्म और संस्कृति को पदच्युत कर दिया है, के कारण मंगलमय विश्व अमंगलकारी परिस्थितियों से पूरित हो रहा है। लोगों ने 'शक्ति के अधिकार में सब कुछ' की पाशविक धारणा बना ली है, इसी कारण छल, शोषण, अत्याचार, वर्ग-भेद और न जाने कितने दुराचार बढ़ गए हैं। आज की परिस्थिति में उद्धार का एक ही उपाय है और वह यह कि धर्म की सच्ची भावना का प्रवर्तन हो।

विश्व में जो भी वैभव, विकास की विभूतियाँ हैं, वे सब धर्म के किसी न किसी अंश को ही लेकर जन्मी हैं। विचारों की गंभीर साधना, विश्वासों की कोई भी खोज, सद्गुणों के अभ्यास का कोई भी प्रयत्न, यह सब उन्हीं स्रोतों से उत्पन्न होते हैं जिनका नाम धर्म है।

मनुष्य में जो विशेषता है, वह प्राणिमात्र में आत्मीयता, प्रेम और विश्वास का आदान-प्रदान है। इसी का नाम धर्म है। यदि मनुष्य उससे वंचित है तो वह मनुष्य नहीं। मनुष्यता का गौरव केवल धार्मिकता है। मनुष्य समाज में शांति एवं स्थिरता का आधार भी यही है कि मनुष्य दूसरों की आवश्यकताओं को पहचानने और प्राथमिकता देने में संकोच न करे, उसे अपने हित से बड़ा माने। धर्म के बाह्याडंबर की आवश्यकता नहीं, यदि मनुष्य हृदय की निर्मल भावनाओं को ही परिष्कृत और प्रसारित कर लेता है तो यह बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसी का नाम धर्म है। इसी का नाम धारण करना, जीवन लक्ष्य को प्राप्त करना, सत्य में समाहित होना आदि है। धर्म कोई वर्ग, संप्रदाय, कुल, जाति अथवा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गोत्र की उच्चता-निम्नता का मापदंड नहीं, वह अंतरात्मा के परिष्कार का माध्यम और सुखी समाज का साधन है, जिससे किसी का अहित न हो।

सच्चे अर्थों में धार्मिक व्यक्ति का धर्म बिलकुल सीधा-सादा होता है जिसमें धर्म-विश्वासों, धर्म-सिद्धांतों के मनोभावों या आधिदैविक तत्त्वों की बेड़ियाँ नहीं होती। यह उस आत्मा की वास्तविकता का प्रतिपादन करता है जो काल और देश से ऊपर व्याप्त है। वह मानव मात्र को प्रेम, एकता, आत्मीयता से रहने, व्यवहार करने, बढ़ने और फलने-फूलने का समान अवसर प्रदान करता है। अपनी व्यावहारिक अभिव्यक्ति के लिए धर्म की सूक्ति है—'जो भी भला करता है वह भगवान का है'। न्यायपूर्वक आचरण करना, सौंदर्य से प्रेम करना और सत्य की भावना के साथ विनम्रतापूर्वक चलना—यही सबसे ऊँचा और वास्तविक धर्म है। यह किसी एक जाति या एक देश तक सीमित नहीं।

हम किसी परंपरा के अंध भक्त नहीं, किसी नियम के सेवक नहीं। अनेक दवाओं में जो सही होती है, जो डॉक्टर स्वास्थ्यकारक बताता है उसे ग्रहण कर लेते हैं, शेष उससे बढ़िया और कीमती होने पर भी हम नहीं खाते। जो सबके लिए हानिरहित और स्वास्थ्यकारी हो वही औषधि ग्रहणीय है। एक-दूसरे के साथ न्याय के आधार पर काम करना, औरों की सहायता करना, सब पर दयादृष्टि रखना, शाश्वत सत्य की उपासना करना, सर्वमैत्री, सबसे प्रेम की भावना रखना—यह बातें सबके लिए संतोषदायक, हितकर और आनंददायी हैं। इन्हें स्वीकार करने में किसी भी मनुष्य को आपत्ति नहीं हो सकती। इन्हीं का नाम है—धर्म जीवन। जब ऐसे मानव जीवन का प्रवर्तन होगा, तभी सच्ची सुख-शांति के दर्शन उपलब्ध होंगे।

❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुख-शांति का राजमार्ग—धर्माचरण

धर्म एक राजमार्ग है जिस पर चलते हुए भौतिक प्रगति और आत्मिक शांति को प्राप्त करने के लिए लक्ष्य तक सरलतापूर्वक पहुँच सकना संभव हो सकता है।

पहुँचना सभी पूर्णता तक चाहते हैं—अभीष्ट सबका शाश्वत सुख ही है। इच्छा सभी की एक है, पर रास्ता भटक जाने से लोग कँटीली झाड़ियों में उलझ जाते हैं और सुख की चेष्टा करते हुए भी दुःख पल्ले पड़ता है।

प्रगति का राजमार्ग एक ही है—धर्म का अवलंबन। इसी सड़क पर चलते हुए यात्रा सरल और सुनिश्चित रह सकती है। पूर्णता के लक्ष्य तक पहुँचने की कोई और सीधी पगडंडी नहीं है। जो उतावली करके जल्दी पहुँचने की आतुरता में पगडंडी ढूँढ़ते हैं, वे भूल-भुलैयों में भटककर ऐसे दल-दल में जा फँसते हैं, जहाँ से न आगे बढ़ना होता है और न पीछे हटना। मंजिल दूर रह जाती है और जाल में फँसे पक्षी की तरह एक नए संकट का और सामना करना पड़ता है।

अधर्म का रास्ता अपनाकर भौतिक प्रगति के लिए आतुर लोग पगडंडी पर चलने वाले लोग ही हैं। उन्हें देरी स्वीकार नहीं। बीज बोने के दिन ही उन्हें फल चाहिए। अंकुर उगने से लेकर पौधे को विकास-क्रम पूरा करने में जो समय लगता है, उतनी प्रतीक्षा वे नहीं करना चाहते। यह उतावली अवांछनीय कार्य करने की—अनीतिपूर्वक उपार्जन के लिए विवश करती है। आज की इच्छा कल ही पूरी हो जाए, परसों के लिए इंतजार न करना पड़े—इस जल्दबाजी में लोग भटकते और कुमार्गगामी बनते हैं। तत्काल कुछ मिलता भी दीखे तो वह जुगनू की चमक जैसा जादू होता है। उसमें ठहरने की क्षमता जरा भी नहीं होती। रोशनी में चमकते पानी के बुलबुले मोती जैसे दीखते भर हैं, उन्हें संग्रह करके कोई मोती का व्यापारी नहीं बन सकता।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधर्म का आचरण करके किसी ने भी आज तक स्थिर प्रगति नहीं की। ओस चाटने से किसी की प्यास नहीं बुझी। अनीति की कमाई किसी को शांति नहीं दे सकी।

धर्म का मार्ग वैसा ही है जैसा विद्यार्थी का क्रमिक अध्ययन करते हुए स्नातक बनना। माली विधिवत बगीचा लगाता है और तत्परतापूर्वक शांत चित्त से पौधों को सँभालता रहता है। वह जानता है कि फल नियत अवधि पूरी होने पर ही आवेंगे। आज विद्यालय में भरती होने वाला छात्र कल एम. ए. बनने को आतुर हो तो नकली प्रमाणपत्र ढूँढ़ने का ही कुछ जाल रचेगा। आम की गुठली से पौधा बनने और उन पर फल लगे दिखाते हुए बाजीगर फिरते रहते हैं, पर उन जादू के पेड़ों से आम की फसल उगाने का उपार्जन संभव नहीं। न वह एम. ए. का नकली प्रमाणपत्र काम आता है और न बाजीगर का बगीचा यशस्वी होता है। तुरत-फुरत सफल बनने का लालच ही मनुष्य को अधर्म का मार्ग अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। इस कँटीली पगडंडी पर चलने के लिए जो भी मचला उसने धोखा ही खाया है, कष्ट ही उठाया है।

धर्म का पहला लक्षण है—धैर्य। भगवान मनु ने धर्म के दस लक्षण गिनाते हुए पहला बताया है—'धृति'। धृति अर्थात धैर्य। धैर्य का तात्पर्य है उतावली छोड़कर, अभीष्ट प्रयोजन का अभीष्ट मूल्य चुकाने की व्यवस्था बनाना। लंबी मंजिल को क्रमिक गतिशीलता के साथ साहस और उत्साह के साथ पूरी करना।

धर्म की राह पर चलते हुए ही भौतिक प्रगति और आत्मिक पूर्णता का लक्ष्य पूरा किया जा सकता है। धार्मिक व्यक्ति का पहला प्रयास अपने गुण, कर्म, स्वभाव को परिष्कृत करना होता है। उनमें जहाँ-जहाँ मलिनता होती है, वहाँ धर्मवृत्ति उसे स्वच्छ करती है। इस स्वच्छता के साथ ही वह साहस विकसित होता है जिसके सहारे सन्मार्ग पर चलते हुए चिरस्थायी प्रगति और सुख-शांति का वरण किया जा सके।

❑❑

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org